इकाई 14 निःशक्त विद्यार्थियों की सामाजिक-भावनात्मक समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताएँ

- 14.3.1 सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताओं का महत्व
- 14.3.2 सामाजिक-भावनात्मक समस्याओं का उद्‌गम

14.4 निःशक्त व्यक्तियों की सामाजिक-भावनात्मक समस्याएँ

- 14.4.1 दोषारोपण और प्रत्याहार
- 14.4.2 भावनात्मक समस्याएँ
- 14.4.3 अंतःवैयक्तिक सम्बन्धों और सामाजिक समायोजन में समस्याएँ
- 14.4.4 संप्रेषण समस्याएँ
- 14.4.5 नकारात्मक आत्म-अवधारणा
- 14.4.6 व्यवहारात्मक समस्याएँ
- 14.4.7 रोजगार में समस्याएँ

14.5 अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका

14.6 निर्देशन– परामर्शदाता की भूमिका

14.7 सारांश

14.8 इकाई अंत अभ्यास

14.1 प्रस्तावना

यह इकाई निःशक्त विद्यार्थियों की सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताओं को समाहित करती है। यह इन आवश्यकताओं के महत्व और इन व्यक्तियों में सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताओं से सम्बन्धित समस्याओं के उद्‌गमन की व्याख्या करती है। यह दिव्यांगताओं के प्रकार और इन विद्यार्थियों की सहायता, उनकी उन समस्याओं का सामना करने में अभिभावकों, शिक्षकों और निर्देशन परामर्शदाताओं की भूमिका का वर्णन भी करती है, जो उनके सामाजिक-भावनात्मक विकास के कारण उत्पन्न होती हैं।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- विभिन्न प्रकार की दिव्यांगताओं अर्थात् मानसिक, श्रवण, दृष्टि और शारीरिक की सूची बनाने और व्याख्या कर सकेंगे;
- निःशक्त व्यक्तियों की सामाजिक-भावनात्मक समस्याओं का शारीरिक, दृष्टि, श्रवण और मानसिक निःशक्तताओं के संदर्भ में वर्णन कर सकेंगे;
- विकलांग विद्यार्थियों को उनकी समस्याओं को कम करने के लिए अभिभावक और शिक्षकों को कैसे व्यवहार करना चाहिए इसके बारे में खोज कर सकेंगे; और

- विकलांगता वाले विद्यार्थियों और उनके परिवारों की सहायता, एक निर्देशन परामर्शदाता कैसे कर सकते हैं, इसके पता लगा सकेंगे।

14.3 सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताएँ

निःशक्त व्यक्तियों की आवश्यकताओं को समझने के लिए हमें अपने परिप्रेक्ष्य में थोड़ा सा परिवर्तन की आवश्यकता है। आपके द्वारा संपन्न की गई अंतिम तीन गतिविधियों का स्मरण कीजिए और दृष्टि डालने का प्रयास कीजिए कि एक निःशक्त व्यक्ति ने उन्हें कैसे पूरा किया होगा।

उदाहरण के लिए, कल्पना कीजिए कि आप अभी-अभी बाज़ार से खरीददारी करके वापिस आए हैं। एक दृष्टि, श्रवण, शारीरिक या मानसिक रूप से निःशक्त व्यक्ति द्वारा यह कार्य कैसे पूर्ण किया गया होता?

दृष्टि क्षीणता वाले व्यक्ति के साथ मार्ग की तलाश करने, सड़क पार करने या किसी चीज पर गिरने से बचने की समस्याएँ हो सकती हैं। श्रवण क्षीणता वाले व्यक्ति के साथ आने वाली गाड़ियों के हार्न न सुनने की समस्या होगी, शारीरिक निःशक्त व्यक्ति को चलने के लिए सहायता की आवश्यकता हो सकती है और दूरी पार करने के लिए अधिक समय की आवश्यकता हो सकती है। बौद्धिक निःशक्तता वाला व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं के बारे में दूसरों से बातचीत करने में कठिनाई का अनुभव कर सकते हैं। यदि बाज़ार का चक्कर लगाने के लिए वाहन की आवश्यकता हो, जैसे बस, तो समस्या अधिक जटिल हो जाती है। दृष्टि समस्या वाला व्यक्ति बस का नंबर पढ़ने में असमर्थ होगा, गत्यात्मक निःशक्तता वाला व्यक्ति बस में चढ़ने में अक्षम हो सकता है और बौद्धिक निःशक्तता वाला व्यक्ति अपने लक्ष्य को स्पष्ट करने में असमर्थ हो सकता है। संक्षेप में जो चीजें सामान्य व्यक्तियों के पास स्वाभाविक रूप से आती हैं, वे निःशक्त व्यक्तियों के लिए सरल नहीं हैं। यह उनमें तनाव/निराशा उत्पन्न होने का कारण होती हैं।

सामाजिक प्रणाली के कारण विकलांगता

एक सामान्य व्यक्ति की भाँति कार्यों को करने की निपुणता की निःशक्तता के कारण उत्पन्न निराशा के अतिरिक्त विशेष आवश्यकता वाले व्यक्ति का कष्ट अन्य घटकों द्वारा भी संयुक्त हो जाता है। एक प्रमुख बाह्य घटक समाज का दृष्टिकोण है। दृष्टिकोण, उपेक्षा से मजाक बनाना तक अलगाव तक, स्वीकृति तक भिन्न हो सकता है।

निःशक्त व्यक्तियों के लिए आप कैसा दृष्टिकोण रखते हैं, यह देखने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों का ईमानदारी से उत्तर दीजिए:

1) क्या आपने निःशक्त व्यक्ति की उपस्थिति में कभी अटपटा महसूस किया?

2) यदि आपको पता लगे कि निःशक्त व्यक्तियों का एक समूह आपका पड़ोसी बनने वाला है, क्या आप इससे परेशान होंगे?

3) क्या आप एक निःशक्त व्यक्ति को व्यवसाय देने में उपेक्षा करेंगे?

4) क्या आप निःशक्त व्यक्तियों की समस्याओं के प्रति जागरूक हैं जिनका सामना उन्हें जन परिवहन, सामान्य जन भवनों में प्रवेश में या टेलीफोन का उपयोग करने में करना पड़ सकता है।

5) यदि एक निःशक्तता वाला व्यक्ति किसी सामाजिक सभा में उपस्थित है तो क्या आप उसकी उपेक्षा करेंगे?

6) क्या आप कभी अनुभव करते हैं कि आप एक निःशक्त व्यक्ति को एक सामान्य की तुलना में कम समझ कर व्यवहार कर रहे हैं।

7) क्या आप एक निःशक्त व्यक्ति का अतिरिक्त विशेष ध्यान रखेंगे।

उपर्युक्त प्रश्नों में से किसी के लिए यदि आपका उत्तर "हाँ" है तो यह निःशक्त व्यक्तियों के प्रति आपका थोड़ा नकारात्मक दृष्टिकोण दर्शाता है, जो उनके साथ आपको समायोजन को प्रभावित कर सकता है। यह निःशक्त व्यक्तियों के लिए अतिरिक्त सामाजिक-भावनात्मक समस्याओं को जन्म देगा।

हमारे देश में प्रणालियों और जन-सुविधाओं का निरूपण इस प्रकार किया जाता है कि वे सामान्य व्यक्तियों की आवश्यकताओं की ही पूर्ति करती हैं। हमारे टेलीफोन, परिवहन, बैंकिंग प्रणाली यहाँ तक लिफ्ट भी इस प्रकार डिजाइन नहीं किए जाते कि उन्हें निःशक्त व्यक्ति स्वतंत्र रूप से उपयोग में ला सकें। जबकि विकसित देशों में निःशक्त व्यक्तियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर प्रणालियाँ डिजाइन की गई हैं। उदाहरण के लिए अग्रणी देशों में, सार्वजनिक स्थानों में लिफ्ट में ब्रेल द्वारा लिखे गए स्विच होते हैं जो दृष्टि क्षीणता वाले व्यक्तियों के लिए सुविधाजनक हैं। सार्वजनिक बसों में पैर रखने का स्थान इस प्रकार बना होता है कि उसे इतना नीचे किया जा सके कि उसमें पहिया कुर्सी में बैठा व्यक्ति भी आसानी से चढ़ सके। श्रवण समस्याओं वाले व्यक्तियों के लिए विशेष टेलीफोन उपकरण उपलब्ध हैं।

इस प्रकार निःशक्त व्यक्तियों की आवश्यकता के अनुसार प्रणालियों को डिजाइन न करने से जब वे इनका उपयोग करते हैं, तो उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इससे निःशक्त व्यक्तियों का दैनिक जीवन अधिक श्रमसाध्य बन जाता है। ऐसी प्रणाली जो इनकी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करती, इसके कारण उन्हें चिंता, डर, अलगाव और आघात का मुकाबला करना पड़ता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बेपरवाह प्रणाली के कारण निःशक्त व्यक्ति अपंगता का अनुभव करते हैं, जो उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करती।

सामान्य व्यक्तियों के पास अपने तनाव को दूर करने के लिए उनके पास साधन होते हैं – मनोरंजन या अन्य सामाजिक क्रियाकलाप में संलग्न होना। यहाँ भी पुनः निःशक्त व्यक्ति नुकसान में रहते हैं। उपर्युक्त चर्चा के प्रकाश में यह अति आवश्यक है कि निःशक्त व्यक्तियों की सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को समझें, उन्हें सर्वप्रथम, एक "**व्यक्ति**" के रूप में देखा जाए और बाद में "**दिव्यांग**" के रूप में।

14.3.1 सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताओं का महत्व

"मेरा भाई तीन महीने में एक बार एक जोड़े जूते खरीदता है", मुझे एक वर्ष में एक जोड़ा जूता मिलता है।"

"मेरी माँ मेरी बहन को सभी पार्टियों में ले जाती हैं, परंतु मुझे नहीं। वह मुझसे कहती है कि जब मैं उनके आसपास होती हूँ, तो उन्हें बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।"

"मेरी माँ मुझे पार्क में दूसरे बच्चों के साथ नहीं खेलनी देतीं, क्योंकि दूसरे बच्चे मेरा मजाक उड़ाते हैं और मुझे बेवकूफ कहते हैं।"

"मेरे पिता कक्षा में मेरे कम निष्पादन के लिए मेरी माँ से लड़ाई करते रहते हैं।"

"यह मुझे बहुत निराश करता है।"

निःशक्त व्यक्तियों की उपर्युक्त अभिव्यक्तियाँ क्या दर्शाती हैं?

निःशक्त व्यक्तियों की शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताएँ दूसरे व्यक्तियों के समान होती हैं।

सभी बच्चे कुछ नियत मूल आवश्यकताओं के साथ जन्म लेते हैं; उनके शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से विकसित होने से पूर्व इनकी संतुष्टि आवश्यक है। इन क्षेत्रों में से किसी भी क्षेत्र की प्रगति आवश्यक रूप से दूसरों की प्रगति से सम्बन्धित होती है। इस संदर्भ में सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को अवलोकित करने की एक विधि मैस्लो (1954) द्वारा निरूपित की गई है जिन्होंने यह विचार प्रस्तुत किया कि व्यक्तिगत आवश्यकताओं का परिणाम मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य है जो एक अनुक्रम के रूप में बनती हैं। इस मॉडल के अनुसार उच्च क्रम वाली आवश्यकताएँ, जैसे प्रेम, आत्मसम्मान और आत्म-साक्षात्कार तभी प्राप्त किया जा सकता है, जब अधिक प्रबल शारीरिक और सुरक्षा की आवश्यकताओं में भी प्रत्येक स्तर की उपलब्धि का परिणाम आत्म-साक्षात्कार की ओर पहुँचने तक, पूर्व स्तर की आवश्यकताओं की संतुष्टि पर आधारित होता है। जहाँ शारीरिक और स्वास्थ्य की आवश्यकताएँ जीने के लिए आवश्यक हैं, वहीं भावनात्मक और सामाजिक प्रगति बच्चे के समग्र विकास हेतु अत्यंत आवश्यक हैं। बच्चों की मनोवैज्ञानिक बुद्धि उसके जीवन में महत्वपूर्ण व्यक्तियों द्वारा उनहें प्रिय अथवा स्वीकार्य महसूस करवाकर और साथ ही उन्हें उत्तेजित या सक्रिय बनाकर बढ़ावा दिया जा सकता है।

विश्वास के विकास के लिए शारीरिक और भावनात्मक सुरक्षा एक आधार प्रदान करती हैं, जो बच्चे का वातावरण के क्षेत्रों की खोज और जाँच करने और "स्व" की भावना का विकास करने की ओर संघर्ष करने के अवसर प्रदान करता है।

जैसा कि निःशक्त व्यक्तियों को सामाजिक विकलांगता के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनकी सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताओं पर ध्यान का अभाव उनकी समस्याओं को बढ़ा सकता है। अतः यह आवश्यक है कि उनकी सामाजिक-भावनात्मक समस्याओं को समझें ताकि वे अपनी क्षमताओं को अधिकतम तक विकसित कर सकें।

14.3.2 सामाजिक-भावनात्मक समस्याओं का उद्‌गम

किसी भी प्रकार की निःशक्तता एक व्यक्ति की समाज में गतिशीलता को कई प्रकार से सीमित करने के लिए पर्याप्त है।

सहानुभूतिपूर्ण प्रत्युत्तर, नकारात्मक या प्रतिकूल प्रतिक्रियाएँ या दूसरों द्वारा व्यवहार में भेदभाव का प्रदर्शन, निःशक्त व्यक्तियों को समाज के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। परिणामस्वरूप सामाजिक संसार में उनका अलगाव, कुसमायोजन और अप्रतिभागिता हो जाते हैं। निःशक्तता एक चिकित्सा का विषय नहीं है, यह सामाजिक चिंता का क्षेत्र भी है। यह एक व्यक्ति में "वस्तुपरक" चीज नहीं है परंतु एक सामाजिक मूल्य निर्णय है। सामाजिक मूल्य निर्णय एक व्यक्ति के समुदाय और समाज के साथ उसके निर्णय और एकीकरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उसके "विचलन" के प्रति समाज की अनुभूति उसकी रुचियों आकांक्षाओं आदि को समझने की संभावना को कम कर देती है। इन स्थितियों में जो भेदभावपूर्ण, प्रतिकूल और उदासीन होते हैं, प्रायः निःशक्त व्यक्ति अपना व्यवहार अलग कर लेते हैं।

निःशक्त व्यक्ति कुछ चीजों को नहीं कर पाते, जो अमान्य व्यक्तियों द्वारा साधारण उपलब्ध समय में अपेक्षित होती हैं। वे आसपास के समाज द्वारा प्रस्तुत निष्पादन के मानक और व्यवहार के तरीकों के साथ नहीं चल पाते।

सामान्य लोगों के बराबर कार्य न कर पाने की यह निःशक्तता उनमें बैचेनी और "निम्न देखा जाना" की भावना उत्पन्न कर सकती है और इसका परिणाम निम्न आत्मसम्मान होता है। यह निम्न आत्मसम्मान "हीन-भावना" को जन्म देता है।

परंतु यदि विशेष व्यक्ति वाले व्यक्तियों पर उनके परिवार और अन्य निकट सम्बन्धियों द्वारा ध्यान दिया जाए और उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाए, विशेषकर उनके प्रारंभिक जीवन के दौरान, तो यह उनकी "आत्म-छवि" को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा, जो उनके स्वयं के लिए चेतन और अचेतन विचार हैं।

बार-बार असफलताओं का सामना करने पर एक बच्चा कैसा अनुभव करता है? वह निराशा का अनुभव करेगा, किसी भी बच्चे में सफलता के क्रियाकलापों की शृंखला उसमें मनोबल और आत्मविश्वास निर्मित करती है, जबकि असफल क्रियाकलापों की शृंखला द्वारा कोई मान्यता या पुरस्कार नहीं मिलता, जिसके कारण उसका आत्मविश्वास कम हो जाता है जो आगे भी भविष्य के क्रियाकलापों में उसकी सफलता के अवसरों को प्रभावित कर सकता है। उदाहरण के लिए, शारीरिक निःशक्तता वाला बच्चा अपने कुछ संवेदी– मोटर अनुभवों को प्राप्त करना चाहता है, जैसे – अपने हाथों को ठीक से नियंत्रित करना सीखना, आँख और हाथ का समन्वयन, तब बहुत निराशाजनक हो जाता है, जब विशेषरूप से उसके अभिभावक बच्चे द्वारा चम्मच का उपयोग करने या ब्लॉक्स बनाने आदि में उसके प्रयासों के प्रति बेताव या गंभीर हो जाते हैं।

एक बच्चे का एक नियत आयु पर अपेक्षित निष्पादन मुख्य रूप से अभिभावकों की अपेक्षाओं द्वारा निर्धारित होता है। विशेष आयु की आवश्यकताओं वाले बच्चे के निष्पादन की तुलना उसी आयु के सामान्य बच्चे के निष्पादन के साथ करने के लिए उसे भी सामान्य की भाँति होना चाहिए। निःसंदेह यह मानकर कि यह बच्चा बहुत ही एकाक अस्तित्व वाला जीवन नहीं जी रहा/रही हो। परिणामस्वरूप अपनी निःशक्तता पर पैतृक निराशा के साथ, वह जागरूक होने लगता/लगती है कि उसका निष्पादन अन्य बच्चों के साथ मेल नहीं हो रहा है।

इसलिए एक बच्चा सोचता/ती है कि वह अपने अभिभावकों की अपेक्षाओं पर नहीं चल रहा/रही है। इसका परिणाम निम्न मनोबल और आत्मविश्वास के साथ खराब "आत्म-छवि" होता है। इस प्रकार सामाजिक-भावनात्मक समस्याएँ, एक निःशक्तता वाला व्यक्ति अपने बारे में क्या अनुभव करता है, के साथ सम्बन्धित होती हैं, जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है। "सामान्य व्यक्तियों" के दृष्टिकोण भी निःशक्त व्यक्तियों की सामाजिक-भावनात्मक समस्याओं में योगदान करती हैं।

"सामान्य" लोगों की यह प्रवृत्ति होती है कि वे निःशक्तता से सम्बन्धित समस्याओं और निराशाओं पर इतना अधिक ध्यान देते हैं कि निःशक्त व्यक्ति को उसकी स्वयं की योग्यताओं के साथ एक "व्यक्ति" के रूप में स्वीकार करना और समाज के लिए योगदान करना समाप्त हो जाता है अथवा रुक जाता है।

लोग निःशक्तता से सामान्यीकरण करने का प्रयास करते हैं और इसे समग्र व्यक्ति पर आरोपित करते हैं। जैसे एक स्पास्टिक बच्चा कहता है, "क्योंकि मेरी टाँगे वूब्ली हैं, लोग समझते हैं कि मेरा मस्तिष्क भी वूब्ली है।" ऐसा सामान्यीकरण निःशक्त व्यक्तियों के प्रति दोषपूर्ण दृष्टिकोण के मुख्य क्षेत्रों में से एक है।

इसलिए निःशक्त व्यक्तियों को स्वयं के बारे में भावनाएँ और दूसरों की उनके प्रति भावनाएँ, कई सामाजिक-भावनात्मक समस्याओं को जन्म देती हैं।

अपनी प्रगति की जांच कीजिए

टिप्पणीः क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) निःशक्त व्यक्तियों में सामाजिक, भावनात्मक समस्याओं को उत्पन्न करने वाले तीन कारकों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) बच्चे के समग्र विकास के लिए नियत आवश्यकताओं की पूर्ति आवश्यक है। उनमें से किन्हीं दो का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) निःशक्त व्यक्तियों के प्रति सामान्य व्यक्ति की क्या अनुभूति होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) दिए गए कथनों में से सही और गलत बताइएः

क) निःशक्त व्यक्तियों के प्रति समाज का नकारात्मक दृष्टिकोण निःशक्त व्यक्तियों की समस्याओं को जन्म देता है। (सही / गलत)

ख) एक निःशक्त व्यक्ति की मूल शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताएँ ग़ैर-निःशक्त व्यक्ति के समान होती हैं। (सही / गलत)

ग) एक निःशक्त व्यक्ति की आत्म छवि के निर्धारण में पारिवारिक वातावरण का कुछ कार्य नहीं है। (सही / गलत)

14.4 निःशक्त व्यक्तियों की सामाजिक-भावनात्मक समस्याएँ

इस भाग में हम निःशक्त व्यक्तियों की कुछ सामाजिक-भावनात्मक समस्याओं की चर्चा करेंगे, जो सामान्य रूप से इनमें पाई गई हैं।

14.4.1 दोषारोपण और प्रत्याहार

किसी भी प्रकार की निःशक्तता के साथ जुड़े हुए कलंक के कारण, निःशक्त व्यक्तियों को समाज द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता और लोग उनकी योग्यताओं के बजाय अयोग्यताओं को देखने का प्रयास करते हैं। इसके परिणामस्वरूप निःशक्त व्यक्ति वापस हो जाते हैं और बाकी समुदाय से अलग रह जाते हैं। कलंक या दोष की मात्रा एक स्थान से दूसरे स्थान तक भिन्न हो सकती है। विकसित देशों की तुलना में भारत में सामाजिक दोष अधिक प्रचलित हैं। यह दृष्टिकोण समाज में उनके एकीकरण में एक बाधा का कार्य करता है।

निःशक्तता की दृश्यता, जैसा कि शारीरिक और दृश्य क्षीणता में होता है, का परिणाम दूसरों द्वारा अस्वीकृति होता है। यद्यपि, अन्य कारक भी सम्मिलित हैं, तथापि सामने दिखने वाली क्षीणता ऐसी निःशक्त व्यक्तियों की आत्म-अवधारणा को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हुई प्रतीत होती है। ये व्यक्ति स्वयं को दूसरों से भिन्न समझ सकते हैं और उनमें फिट नहीं हो पाते और इसके परिणामस्वरूप वे अपने साथियों के संपर्क से वापस हो जाते हैं। निःशक्तता के प्रति समाज के अज्ञान का परिणाम निःशक्त व्यक्तियों को अस्वीकार करना हो सकता है, जो बाद में वापस हो जाते हैं और अलग रह जाते हैं। उदाहरण के लिए, दृश्य क्षीणता वाले व्यक्तियों को कोई हानि नहीं होती, परंतु उनके प्रति नकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण के कारण वे दृष्टि के लिए दुःखी होते हैं।

बौद्धिक निःशक्त व्यक्तियों की प्रत्याहार की समस्या का कारण भी समाज का उनके प्रति दयनीय या अधिकांशतः प्रतिकूल दृष्टिकोण है जो उनकी समस्या को अधिक बड़ा बनाते हैं और यहाँ तक कि उनके स्वतंत्रता और अस्तित्व को धमकी देते हैं।

14.4.2 भावनात्मक समस्याएँ

आपने शारीरिक और क्षीणता वाले व्यक्तियों को एक स्थान पर घूमते हुए देखा होगा। सामान्य व्यक्तियों की तुलना में वे कौन से संकटों का सामना करते हैं? उत्तर स्पष्ट है, शारीरिक संकट असुरक्षा और भावनात्मक बाधाएँ उत्पन्न कर सकते हैं। यह प्रभाव तब अधिक होता है जब एक बच्चे के रूप में वे घर, विद्यालय और समुदाय में नकारात्मक अनुभवों का सामना करते हैं।

क्योंकि निःशक्तता की दृश्यता तिरस्कारपूर्ण ध्यान आकर्षित करती है, अतः व्यक्ति अपनी निःशक्तता को छिपाने का प्रयास करते हैं। इसी कारण व्यक्ति प्रायः चलने के लिए छड़ी, बैसाखी, नेत्र-चश्मा और श्रवण सहायक यंत्र के उपयोग का विरोध करते हैं, भले ही यह कार्यात्मक क्षीणता को जन्म दे। कभी-कभी निःशक्तता को छिपाने का कार्य अभिभावक भी करते हैं, जो अपने बच्चों का व्यवहार दूसरे के सामने नहीं दिखाने चाहते या अपने विकृत बच्चों/संतानों के लिए शर्मिंदा होते हैं। इसका परिणाम निःशक्त व्यक्तियों के लिए शर्मिंदगी होती है जो प्रायः भावनात्मक आघात को जन्म देती है। कुछ मनोदैहिक शिकायतों में सम्मिलित हैं: अनिद्रा, कम भूख, जीवन में धीरे-धीरे रुचि का कम होना, स्वयं और अपने परिवार के साथ नकारात्मक दृष्टिकोण, असुरक्षा, चिंता और भावनात्मक अस्थिरता।

जीवन की माँगों की धमकी और उनके प्रति उभयभावी दृष्टिकोण द्वारा भ्रमित निःशक्त व्यक्तियों की चिंताओं से पीड़ित होने की संभावना होती है। परिणामस्वरूप वे अपने

क्रियाकलापों के क्षेत्रों को रोक सकते हैं, अपनी आकांक्षाओं को निम्न रखें और असफलताओं के डर से पीड़ित हो सकते हैं। अतः क्षीणता के कारण थोपी गई चिंता, जीवन की माँगों के साथ जूझने की योग्यता में कमी का एक महत्वपूर्ण कारक है। मुकाबला करने की यह घटी हुई क्षमता प्रायः आवेषपूर्ण, बाध्यकारी और कठोर व्यवहार द्वारा अभिव्यक्त होती है।

श्रवण क्षीणता की उपस्थिति स्वयं में भावनात्मक समस्याओं का कारण नहीं बनती। श्रवण क्षीणता वाले व्यक्तियों के समस्या व्यवहार श्रवण वाले व्यक्तियों के समान अधिक और भिन्न कम होते हैं। यदि बहरापन पूर्व बाल्यावस्था से उपस्थित हो तो यह पर्याप्त तनाव उत्पन्न कर सकता है और व्यक्तित्व विकास पर विपरीत प्रभाव डालता है। अपने बच्चों में श्रवण श्रीणता के कारण अभिभावक या तो उनके लिए प्रत्येक कार्य करते हैं, जिससे उनमें आत्मनिर्भरता में देरी होती है या अपने बच्चों की उपेक्षा करते हैं, जिसका परिणाम उनमें चिंता उत्पन्न करना होता है।

कभी-कभी अभिभावकों के भेदभावपूर्ण व्यवहार के कारण निःशक्त बच्चों में अपने भाई-बहनों के प्रति ईर्ष्या की भावना विकसित हो जाती है, जिनके लिए वे सोचते हैं कि अभिभावक उनके प्रति बेहतर व्यवहार करते हैं।

दृश्य क्षीणता वाले व्यक्तियों में, उन्हें देखे जाने का भय एक भावनात्मक तनाव उत्पन्न कर सकता है और यह डर आगे के जीवन में ठीक से कायम रह सकता है। क्योंकि बौद्धिक निःशक्त व्यक्तियों में मुकाबला करने के निम्न कौशल होते हैं, अतः दैनिक जीवन के तनाव उनके लिए अधिक होते हैं। यह पाया गया है कि भावनात्मक बाधाओं की अधिक घटनाएँ सामान्य जनसंख्या की तुलना में नरम बौद्धिक निःशक्त व्यक्तियों में होती हैं। उन्हें अधिक तनावों, निराशाओं और विरोधों का सामना करना पड़ता है और इसके परिणामस्वरूप उनमें व्यवहार सम्बन्धी विकारों के विकसित होने की संभावना अधिक होती है।

एकाधिक निःशक्तता स्थितियाँ एक व्यक्ति की सामाजिक और भावनात्मक समस्याओं में वृद्धि कर सकती हैं। क्षीणता की संख्या बढ़ने के साथ प्रभावी सामाजिक कार्यकरण के लिए क्षमता कम हो जाती है। श्रवण और दृश्य क्षीणता से सम्बन्धित बौद्धिक निःशक्त व्यक्तियों के अध्ययनों में रिपोर्ट किया गया है कि उनमें खराब सामाजिक सम्बन्ध और सामान्य रूप से कुअनुकूलित अन्तर्वैयक्तिक व्यवहार जैसे आक्रामकता पाए जाते हैं।

14.4.3 अंतर्वैयक्तिक सम्बन्धों और सामाजिक समायोजन में समस्याएँ

घर में निरंतर निराशा और अस्वीकृति के वातावरण के फलस्वरूप गंभीर कुसमायोजन की समस्या उत्पन्न हो जाती है। निःशक्तता वाला एक बच्चा अभिभावकों के बीच विवाद का कारण बन सकता है, जो कमियों के लिए बार-बार एक-दूसरे पर दोषारोपण कर सकते हैं। अभिभावकों के बीच असामंजस्य और सहोदरों द्वारा स्वीकृति का अभाव, निःशक्त व्यक्ति के लिए अस्वीकृति की भावना को अधिक तीव्र बना देते हैं।

संतोषप्रद प्रौढ़ सम्बन्ध मुख्य रूप से संतुष्ट प्रथम सम्बन्ध (माँ और बच्चा) पर आधारित होता है। एक अंधे शिशु की देखभाल में परस्पर आकर्षण का विकास नहीं हो पाता जो बाद में समायोजन की समस्या उत्पन्न करता है। दूसरों से वंचन और दुराचार के कारण निःशक्त व्यक्ति कुछ विशेषताओं का प्रदर्शन कर सकते हैं जैसे चिड़चिड़ापन, एकदम गुस्से में आ जाना, आक्रामता, साथ ही मूडीनैस और भावनात्मक अस्थिरता, दूसरों द्वारा चिढ़ाना और आलोचना करना, निःशक्त व्यक्तियों में निम्न आत्म सम्मान को जन्म देता है।

दृश्य क्षीणता वाले व्यक्तियों के साथ गतिशीलता की समस्याएँ होती हैं जिसके कारण उनके सामाजिक परस्पर क्रिया के अवसर प्रभावित होते हैं। गति के कौशलों के अर्जन को खेलों के द्वारा प्रोत्साहित करना चाहिए जो उन क्रियाकलापों में सम्मिलित हैंः चढ़ना, संतुलित करना, बाउंसिंग और सून। ये क्रियाकलाप आत्मविश्वास की भावना और आत्म नियंत्रण की भावना को बढ़ावा देते हैं जो एक स्वस्थ सामाजिक परस्पर क्रिया के लिए एक आधार बनाते हैं।

बौद्धिक निःशक्त व्यक्तियों में सही और गलत के मूल्य को सम्मिलित करने की क्षमता और आंतरिक नियंत्रणों का विकास करने में थोड़ा धीमे होते हैं। परिणामस्वरूप वे बारंबार अनुपयुक्त या सामाजिक रूप से अस्वीकार्य व्यवहार का प्रदर्शन कर सकते हैं।

वाणी और श्रवण निःशक्त व्यक्तियों के पास कई संप्रेषण समस्याएँ होती हैं जो सामाजिक-परस्पर-क्रियाओं सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न करते हैं।

14.4.4 संप्रेषण समस्याएँ

श्रवण निःशक्त व्यक्तियों के साथ मुख्य समस्या संप्रेषण की है और इस समस्या के कई परिणाम हैं। यह समाजीकरण और अनुशासन की समस्या उत्पन्न करती है।

श्रवण क्षीणता वाले विद्यार्थी अपने प्रारंभिक वर्षों में उनको ठीक से न समझ पाने के कारण निराशा का अनुभव करते हैं। इसके कारण वे प्रायः झुंझलाहट प्रदर्षित करते हैं।

तथापि हाल के वर्षों में श्रवण क्षीणता वाले व्यक्तियों के लिए अवसरों को बढ़ाने में सकारात्मक विकास हुए हैं। कम्प्यूटर और विशेष रूप से निरूपित पोर्टबल यंत्रों तक पहुँच प्रभावी व्यक्तिगत संपर्क बनाने में सहायता पहुँचाते हैं।

श्रवण क्षीणता वाले व्यक्तियों की मुख्य कठिनाई उनके स्पष्ट बोलने में होती है। बोलने में समस्या बच्चों के सामाजिक सम्बन्ध को ही अवरुद्ध नहीं करती, बल्कि यह विशेष रूप से उनके लिए कठिन हो जाती है कि वे अपनी आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से बता सकें।

दूसरे व्यक्तियों, जो असुविधा व्यक्त कर सकते हैं, असंतोष को ठीक से प्रस्तुत कर सकते हैं और जो बात वे नहीं समझे उसके बारे में प्रश्न पूछ सकते हैं; की तुलना में श्रवण क्षीणता वाले व्यक्तियों में सामाजिक कौशलों के अर्जन और अपने सामाजिक वातावरण में समायोजन के प्रति कम लचीला होने की संभावना होती है।

14.4.5 नकारात्मक आत्म-अवधारणा

आत्म-अवधारणा एक व्यक्ति का उन सभी क्षेत्रों में जिनसे वह अवगत है, अपनी स्वयं का श्रेय और सीमाओं का मूल्यांकन है। "जीवन जीने के योग्य है" यह अनुभव करने के लिए व्यक्ति के पास अपने "स्व" के बारे में सकारात्मक अवधारणा होनी चाहिए। हमारे आसपास के लोग हमारी आत्म-अवधारणा के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

क्षीणता वाले व्यक्तियों में नकारात्मक मूल्यांकन के संकेत मिलने की संभावना होती है। यह पाया गया है कि निःशक्त व्यक्ति प्रायः अनुभव करते हैं कि उनके सकारात्मक गुणों की पहचान दूसरों के द्वारा करने में उनकी स्थितियाँ रूकावट डालती हैं।

यदि शिक्षक और अभिभावक ऐसी टिप्पणीः "तुम" यह नहीं कर सकते", "तुम्हारे लिए इसे प्राप्त करना संभव नहीं है," आदि द्वारा उनकी क्षीणता पर ही ध्यान केन्द्रित करते हैं तो बच्चे में आत्मविश्वास का अभाव हो जाता है, और नकारात्मक आत्म-अवधारणा का विकास होता है।

14.4.6 व्यवहारात्मक समस्याएँ

अभिभावकों और समाज के दोषपूर्ण दृष्टिकोण जैसे अस्वीकृति, अतिसुरक्षा और अत्यधिक अपेक्षा के कारण निःशक्त बच्चों में कई भावनात्मक और व्यवहार की समस्याएँ, जैसे आक्रामकता, सिर मारना, झुंझलाना आदि विकसित हो जाती हैं। शारीरिक और दृश्य क्षीणता वाले व्यक्तियों की तुलना में सामाजिक प्रतिक्रियाएँ बौद्धिक– निःशक्त व्यक्तियों के साथ अधिक प्रतिकूल होती हैं।

अभिभावकों और शिक्षकों को अधिक अनुकूल दृष्टिकोण का सृजन करने का प्रयास करना चाहिए, अर्थात् ऐसा दृष्टिकोण जो निःशक्त बच्चों को स्वीकार करने और ग़ैर-अलगाव वाला हो। समाज के बिना उपयुक्त दृष्टिकोण के अभिभावकों के लिए यह कठिन है कि वे अपने निःशक्त बच्चों का पालन कर सकें और प्रौढ़ों के लिए समाज में रहना, यथासंभव स्वतंत्रता का आनंद ले सकें और अपनी वास्तविक क्षमताओं के अनुसार कार्य कर सकें, और अधिक कठिन है।

अति सुरक्षा का दूसरा हानिकारक प्रभाव यह है कि अभिभावक व्यक्ति को एक स्वतंत्र मनुष्य के रूप में विकसित नहीं होने देते। जो प्रौढ़ अपनी बाल्यावस्था के दिनों में अति सुरक्षित रहे हैं, वे अपरिपक्व, असुरक्षित हो सकते हैं और अधिकांशतः अपने लिए निर्णय लेने में दूसरों पर निर्भर रहते हैं।

अभिभावकों की अति अपेक्षा व्यक्ति में आत्मविश्वास का अभाव और असुरक्षा उत्पन्न करती है। व्यक्ति के पास कई योग्यताएँ हो सकती हैं परंतु वह गंभीर हीन भावना का अनुभव करेगी/करेगा। इसका कारण उसके अभिभावकों का आलोचनात्मक दृष्टिकोण होता है।

अधिकांश निःशक्त व्यक्ति सामाजिक रूप से उपयोग और स्वतंत्र जीवनयापन कर सकते हैं यदि उनकी सहायता उपयुक्त प्रोत्साहन, प्रारंभिक प्रेरणा और मार्गदर्शन प्राप्त करने में की जाए।

14.4.7 रोजगार में समस्याएँ

क्या निःशक्त व्यक्तियों को व्यवसाय में नियुक्त किया जा सकता है। शारीरिक निःशक्त व्यक्ति और दूसरे पुरानी स्वास्थ्य समस्याओं वाले व्यक्ति अपनी योग्यताओं के अनुरूप व्यवसायों में प्रवेश पा सकते हैं। यदि उन्हें सुरक्षित रखने के लिए पर्याप्त उपाय किए जाएँ और उनकी निःशक्तता के कारण, जिनके साथ वे कार्यरत हैं, उन संभावित खतरों के उत्पन्न होने से बचाया जाए तो वे उत्पादकतापूर्ण ढंग से योगदान कर सकते हैं।

व्यवसाय प्राप्त करने में निःशक्त व्यक्तियों के साथ भेदभाव किया जाता है। अधिकांश नियुक्तिकर्त्ता अपने कार्यदल में निःशक्त व्यक्तियों का चयन नहीं करना चाहते हैं। यह मनोवृत्ति व्यवसाय बाज़ार में उनके प्रवेश को रोक देती है। यह कई भावनात्मक समस्याओं को भी जन्म देती है।

अपनी प्रगति की जांच कीजिए

टिप्पणीः क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

5) दूसरों की नकारात्मक प्रतिक्रियाओं के प्रति एक निःशक्तता वाला व्यक्ति कैसे प्रतिक्रिया करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

6) निःशक्त व्यक्तियों में सामाजिक कुसमायोजन का मुख्य कारण क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7) आत्म-अवधारणा को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8) निःशक्त व्यक्तियों के प्रति अभिभावकों द्वारा अत्यधिक सुरक्षा के क्या परिणाम होंगे? किसी एक उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

9) निम्नलिखित कथनों में से सही और गलत बताइए:

क) शारीरिक क्षीणता वाले व्यक्तियों के लिए हस्तक्षेप कार्यक्रमों का तकनीकी विकासों से कोई सम्बन्ध नहीं है। (सही / गलत)

ख) निःशक्त व्यक्ति की शैक्षिक प्रक्रिया में परिवारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। (सही / गलत)

14.5 अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका

1) निःशक्त व्यक्तियों (पी.डब्ल्यू.डी.) को बिना अधीन किए उनकी सीमाओं को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करना।

2) अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा खेल, वार्ता और मुक्त कल्पना को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। खेल समाजीकरण का एक सर्वाधिक शक्तिशाली माध्यम है।

3) निःशक्त व्यक्तियों के लिए विचारशील और पूर्वाग्रह रहित मनोवृत्ति उन्हें आत्म-पर्याप्तता और आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने में सहायक हो सकती है।

4) अभिभावकों और शिक्षकों को घर और विद्यालय वातावरण को निःशक्त व्यक्तियों की पहुँच के योग्य बनाने का प्रयास करना चाहिए। उदाहरण के लिए, सीढ़ियों के साथ रैम्पस का प्रावधान, पहिया कुर्सी के लिए चौड़े दरवाजे आदि।

5) निःशक्त व्यक्तियों के पास एक पूर्ण रूप से स्वतंत्र व्यक्ति की भाँति विकसित होने की क्षमताएँ होती हैं। अभिभावकों और शिक्षकों को निःशक्त व्यक्तियों के सृजनात्मक विकास हेतु स्थितियाँ तैयार और प्रदान करनी चाहिए तथा उनकी रचनात्मकता को बढ़ावा देना चाहिए।

6) अभिभावकों को बच्चे की विशेष आवश्यकताओं को स्वीकारना चाहिए। अभिभावक अनजाने में अपने निःशक्त बच्चे को अस्वीकार या दंडित करने का प्रयास करते हैं या अत्यधिक सुरक्षित रखने की मनोवृत्ति का विकास करते हैं। अस्वीकृति और अति सुरक्षा, दोनों का व्यक्ति के एकीकृत व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

7) अभिभावक और शिक्षक, निःशक्त व्यक्तियों की क्षमताओं के बारे में वृहद् सामान्यीकरण करने का प्रयास करते हैं जो अवांछनीय और अवास्तविक हैं। उसकी योग्यता और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच विसंगतियों की अनुभूति बच्चे के तनाव और बैचेनी में योगदान करते हैं और परिणामस्वरूप उसके व्यवहार में कुछ परिवर्तन आ जाता है।

8) जहाँ तक संभव हो शिक्षकों और अभिभावकों को उन्हें सामान्य जीवन, जितना उनके लिए संभव हो, प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए।

9) भावनात्मक समस्याओं को दबाव या दंड द्वारा नहीं सुलझाना चाहिए। उन्हें यौन रुचि के स्वस्थ और रचनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर मिलने चाहिए। उनके शरीर के लिए क्या लाभदायक है, यह समझने में सहायता हेतु उपयुक्त जानकारी प्रदान करनी चाहिए।

10) सामाजिक क्रियाकलापों का आयोजन उनमें समाजीकरण को बढ़ावा देने के लिए करना चाहिए।

11) बच्चे के सामाजिक व्यवहार के लिए अभिभावकों के बीच भावनात्मक सम्बन्ध, बच्चे के साथ और दूसरे परिवार सदस्यों के साथ उनका सामाजिक सम्बन्ध, मॉडल बनाते हैं। उदाहरण के लिए, लड़ाकू और प्रतिरोधी अभिभावक बच्चों में आक्रामकता और प्रतिरोधी व्यवहार को अन्तर्निविष्ट करते हैं। भावनात्मक रूप से अस्थिर अभिभावक बच्चों में असुरक्षा उत्पन्न करते हैं, जिसका परिणाम खराब समायोजन होता है।

12) निःशक्त बच्चों को भावनात्मक रूप से संतुलित और स्थिर पारिवारिक परिवेश प्रदान करने की आवश्यकता है। यह बच्चे के स्वस्थ सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए एक आधार बनाता है।

13) जहाँ तक उनकी सामाजिक आवश्यकताओं का सम्बन्ध है, विकलांग बच्चों को या तो ठीक से समझा नहीं जाता या गलत समझा जाता है। शिक्षकों और अभिभावकों को उनके सामाजिक विकास की दी गई अवस्थाओं की विशेषता सम्बन्धी आवश्यकताओं से अवगत होना चाहिए, जो उन्हें अधिक प्रभावी ढंग से हस्तक्षेप करने में सहायक हो सकते हैं।

14.6 निर्देशन– परामर्शदाता की भूमिका

परामर्शदाता की भूमिका केवल निःशक्त व्यक्ति के प्रति ही नहीं होती, बल्कि उसके अभिभावकों और परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति भी होती हैं। जो परामर्शदाता निःशक्त व्यक्तियों के साथ कार्य करते हैं, उनके लिए यह समझना आवश्यक है कि उसको परामर्श देने का मुख्य उद्देश्य है कि उपलब्धि हेतु उसकी क्षमता की पहचान के लिए सहायता करना। परामर्शदाता को निःशक्त व्यक्तियों की सहायता, उसकी योग्यताओं में विश्वास विकसित करना, सीखना और जितना हो सकते आत्मनिर्भर बनने में करनी चाहिए।

किसी भी दूसरे व्यक्ति की भाँति निःशक्त व्यक्तियों के पास भी सक्रिय भावनात्मक जीवन होता है। परामर्शदाता को निःशक्त व्यक्तियों को यह अनुभव कराना चाहिए कि परामर्शदाता में विश्वास कर सकता है। परामर्शदाता को यह याद रखना चाहिए कि उसके लिए यह विश्वास अर्जित करना महत्वपूर्ण है, अन्यथा परामर्श का प्रयास सफल नहीं होगा। जो परामर्शदाता निःशक्त व्यक्तियों के साथ कार्य करते हैं, उन्हें ध्यान में रखना चाहिए कि उन्हें सफलता और सफल अनुभवों की आवश्यकता है, जो उन्हें प्रदान करने चाहिए।

परामर्शदाताओं को अभिभावकों के साथ भी कार्य करने की आवश्यकता है ताकि उन्हें अपने बच्चे को सर्वोच्च संभव सीमा तक समझने में और उसे स्वीकार करने में सहायता प्रदान की जा सके। अभिभावकों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए परामर्शदाताओं को उन समस्याओं पर जो अभिभावकों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होती हैं; सीधे चर्चा करना चाहिए।

परामर्श की दिशा निम्नलिखित की ओर होनी चाहिएः

– उन्हें बच्चे के प्रति अधिक निष्पक्ष होने में सहायता करना;

– उनकी सहायता यह जानने में करना कि उनके बच्चे का कौन-सा व्यवहार बढ़ सकता है और किस व्यवहार के जारी रहने की वे अपेक्षा कर सकते हैं।

– निःशक्त बच्चों के परिवारों में व्याप्त सामान्य समस्याओं के समायोजन के बारे में सहायक विचारों द्वारा उनकी सहायता करना।

– निःशक्त व्यक्तियों के प्रबंधन हेतु सहायक पुस्तकों और पैम्फलेट्स जो उनके लिए दिशा-निर्देश प्रदान कर सकते हैं के बारे में सलाह देना और इस सामग्री को उनके अध्ययन हेतु उपलब्ध कराना।

– अपने बच्चे को अधिक सफलतापूर्वक अधिक स्वीकृति, समझ और ज्ञान के साथ कैसे समायोजित करें, इसमें उनकी सहायता करना।

– बच्चे को खाली समय के कामों में और दूसरे सृजनात्मक क्रियाकलापों में संलग्न रखने में उनकी सहायता करेगा।

– उन्हें उपलब्ध सामुदायिक संसाधनों के सम्बन्ध में सलाह देना – क्लीनिक, आश्रय वाली कार्यशालाएँ, शैक्षिक संस्थान आदि।

अभिभावकों को जब अपने बच्चे की निःशक्तता के बारे में ज्ञान होता है तो वे प्रतिक्रियाओं की एक श्रृंखला से गुजरते हैं। सदमा और अविश्वास, अस्वीकृति, क्रोध, अपराध, निराशा, तनाव मान्यता और अनुकूलन की भावनाएँ हो सकती हैं। इन अवस्थाओं में एक परामर्शदाता को सहायक होना चाहिए।

परामर्शदाता को बच्चे के परामर्श और प्रशिक्षण में दोनों अभिभावकों को सम्मिलित करना चाहिए। निदानात्मक मूल्यांकन का जोर इस बात पर होना चाहिए कि बच्चा क्या करने के योग्य होगा। परिवार के सदस्यों को परामर्श देना चाहिए ताकि निःशक्तता के दोष और तत्सम्बन्धी समस्याओं से ऊपर उठने में उनकी सहायता की जा सके।

परामर्शदाता को निःशक्त व्यक्तियों की सहायता उनके भविष्य के नियोजन में करनी चाहिए।

14.7 सारांश

निःशक्तता समस्याओं को जन्म दे सकती है, यदि व्यक्ति इसे अपर्याप्तता की स्थिति के रूप में स्वीकारता है। निःशक्त व्यक्तियों की समस्याओं का पुनर्बलन व्यक्तिगत और सामाजिक कारकों द्वारा होता है। निःशक्त व्यक्तियों की सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताएँ सामान्य व्यक्तियों के समान ही होती हैं।

उनके पास भी दूसरों के द्वारा स्नेह और स्वीकृति प्राप्त करने की मूल आवश्यकता होती है। वे सभी भावनाओं का अनुभव करते हैं। जैसेः खुशी, उदासी, क्रोध और घृणा। मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के बिना कोई भी व्यक्ति सक्षम या अक्षम, यह अनुभव करेगा कि उसका जीवन जीने योग्य नहीं है या निरर्थक है। निःशक्त व्यक्ति अपनी क्षीणता के कारण कई समस्याओं का सामना करते हैं जैसे– निःशक्तता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण और अभिभावकों तथा परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा स्वीकृति का अभाव। निःशक्तता के साथ जुड़ा हुआ सामाजिक दोष प्रायः निःशक्त व्यक्तियों को वापस स्वयं में सीमित रखने के लिए बाध्य करता है। वे अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध स्थापित करने में अक्सर कठिनाई का अनुभव करते हैं। इनमें से कुछ को अपनी आवश्यकताओं और चिंताओं को स्पष्ट रूप से बताने में समस्या होती है। अपने दैनिक जीवन में वे जिन कठिनाइयों का सामना करते हैं, वे नियत व्यवहार सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं जो आगे उनके समाजीकरण और दूसरों के साथ सम्बन्ध को जटिल बना देते हैं। निःशक्त व्यक्तियों के विकास के सहजीकरण में अभिभावकों, शिक्षकों और परामर्शदाताओं की महत्वपूर्ण भूमिकाएँ होती हैं।

14.8 इकाई अंत अभ्यास

1) एक निःशक्त विद्यार्थी के क्रियाकलापों का अवलोकन एक सप्ताह तक कीजिए। वह प्रतिदिन जिन सामाजिक और शैक्षिक कठिनाइयों का सामना करती/करता है, उसके साथ इन पर चर्चा कीजिए। उसकी निःशक्तता के प्रति अभिभावकों, शिक्षकों और सहपाठियों के दृष्टिकोण का पता लगाइए। इसकी एक रिपोर्ट 250 शब्दों में लिखिए।

2) एक माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत निःशक्त विद्यार्थी के शिक्षकों और अभिभावकों का साक्षात्कार लीजिए। उसके उपयुक्त विकास में सहायता करने में उनके द्वारा जिन विभिन्न समस्याओं का सामना किया गया, उनका वर्णन करते हुए 250 शब्दों में रिपोर्ट लिखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY